मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MSK–008

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.एस.के.-008 : संस्कृत साहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) इस प्रश्न-पत्र में **तीन** खण्ड हैं।*

(ii) सभी खण्डों से प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) खण्डों में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही उत्तर लिखिए।

(iv) प्रत्येक प्रश्न के लिए निर्धारित अंक निर्दिष्ट हैं।

खण्ड—क

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) विधाय मूर्ति कपटेन वामनीं

स्वयं बलिध्वंसिबिडम्बिनीमयम्।

उपेत पार्श्वश्चरणेन मौनिना नृपः

पतङ्ग समधत्त पाणिना॥

(ख) जानन्ति हि गुणान् वक्तुं तिद्विधा एव तादृशाम्।

वेत्ति विश्वम्भरा भरां गिरीणां गरिमाश्रयम्॥

(ग) एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्

भिन्न पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।

आवर्तबुदबुदतरङ्गमयान्विकारा

नम्भो यथा, सलिलमेव हि तत्समस्तम्॥

(घ) कर्णान्तविभ्रमभ्रान्तकृष्णार्जुनविलोचन।

करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती॥

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर लिखिए : $4\times15=60$

(अ) महाकवि भवभूति की शैली पर प्रकाश डालिए।

(ब) 'कादम्बरी' का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

(स) चम्पूकाव्य की परम्परा के उद्भव और विकास को लिखिए।

(द) निषधापुरी का वर्णन अपने शब्दों में निबद्ध कीजिए।

(य) 'उत्तररामचरितम्' का कथासार अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड—ग

3. अधोलिखित में से किसी **एक** गद्यांश की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10

(क) प्रभातचन्द्रमिव पाण्डुतया परिगृहीतम् निदाघगङ्गाप्रवाहमिव क्रशिमानमागतम् अन्तर्गतानलं चन्दनविटपमिव म्लायन्तम् अन्य-मिवादृष्टपूर्वामिवापरियितमिव ग्रहगृहीतमिवोन्मत्तमिव छलितामिवान्धमिव वधिरमिव मूकमिव विलासमयमिव, मदनयममिव परायत्तचित्तवृत्ति परां कोटिमधिरूढं मन्यथावेशस्यानभिज्ञेयपूर्वाकारं तमहमद्राक्षम्।

(ख) यस्मिन्नवरतधर्मकर्मोपदेशशान्तसमस्तव्याधिव्यतिकरा: पुरुषायुषजीविन्य: सकलसंसारसुखभाज: प्रजा:। तथाहि कुष्ठयोगी गन्धिकापणेषु स्फोटप्रवादो वैयाकरणेषु, सन्निपातस्तालेषु, ग्रहसंकान्तिर्ज्योति: शास्त्रेषु: भूतविकारवाद: सांख्येषु, क्षयस्तिथिषु गुल्मवृद्धिर्वनभूमिषु, गलग्रहोमत्स्येषु, गण्डकोन्यानं पर्वतवनभूमिषु, शूलसम्बन्धश्चण्डिकायतनेषु दृश्यते न प्रजासु।

× × × × ×